International Journal of Home Science 2020; 6(3): 405-407

ISSN: 2395-7476
IJHS 2020; 6(3): 405-407
© 2020 IJHS
www.homesciencejournal.com
Received: 26-07-2020
Accepted: 22-08-2020

कंचन माला
शेधार्थी, गृह विज्ञान रूनातकोत्तर विभाग, विनोवा, भावे विश्वविधालय, हजारीबाग, झारखण्ड, भारत

डॉ0 मीना सिंह
व्याख्याता, गृह विज्ञान, विभाग, के, बी, महिला महाविधालय, हजारीबाग, झारखण्ड, भारत

Corresponding Author:
कंचन माला
शेधार्थी, गृह विज्ञान रूनातकोत्तर विभाग, विनोवा, भावे विश्वविधालय, हजारीबाग, झारखण्ड, भारत

वर्त्तमान परिप्रेक्ष्य में नारी सशक्तिकरण रामगढ़ जिला के संदर्भ में एक अध्ययन

कंचन माला एवं डॉ0 मीना सिंह

DOI: https://doi.org/10.22271/23957476.2020.v6.i3g.1076

सरांश
शोध कार्य का प्रमुख उद्देश्य वर्त्तमान परिप्रेक्ष्य में नारी सशक्तिकरण का आंकलन था। महिलाएं अब सभी तरह की गतिविधियों जैसे कि शिक्षा, राजनीति,मीडिया,कला और संस्कृति, सेवा क्षेत्र, विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी आदि में हिस्सा ले रही हैं। इससे नारी सषक्तिकरण की पहचान मिलती है। रामगढ़ जिले के शहरी क्षेत्र के महिलाओं का चुनाव जो मध्यम आय एवं निम्न आय वर्ग तथा उच्च और निम्न शैक्षणिक वर्ग से आती है।कुल 240 महिलाओं को अध्ययन के अन्तर्गत इसमें लिया गया है। आँकड़ों का संग्रअनुसूची/प्रश्नावली, कुलश्रेष्ठ द्वारा निर्मित सामाजिक–आर्थिक स्थिति मानदंड महिलाओं के सामाजिक–आर्थिक स्थिति का आकंलन। क्षेत्र के 67.5 की स्थिति सामान्य है। शहरी क्षेत्र के 5 प्रतिशत और ग्रामीण क्षेत्र के 3 प्रतिशत विशिष्ट है। शहरी क्षेत्र के 5 प्रतिशत और ग्रामीण क्षेत्र के 3 प्रतिशत विशिष्ट है।षहरी और ग्रामीण क्षेत्र के अति विशिष्ट स्थान किसी का नही है।

कूट-शब्दः सशक्तिकरण, महिला, सामाजिक, शहरी, ग्रामीण

प्रस्तावना

1. साहित्य समीक्षा

मार्सेक (1978) सामाजिक स्थिति और स्वतंत्रता में हीनता का अनुभव करने वाली कई महिलाये मानसिक तनाव व संवेगात्मक समस्याओं से ग्रस्त थी। मित्तल (1993) भारतीय परिवेश में अध्ययन से यह प्रमाणित होता है कि कार्य भोजन एवं अन्य क्रियाकलापों में महिलायें भेदभाव का शिकार महिलाओं का हर प्रकार से सामाजिक शोषण होता है। जैन (2016) एक नियोजक ने कहा था, मैंने इंग्लैंड और अमेरिका में स्त्रियों को पुरूषो के समान सख्त पाया किन्तु भारत में तो सदियों से स्त्री परावलम्बी रहते आई है। भट्ट, (2016) हम मानते है कि गरीबी में प्रत्येक चरण पर भेदभाव होता है, जिसका कारण वर्ग जाति, रंग, धर्म और लिंग भाषा आदि कुछ भी हो सकता है। शर्मा (1997) महिलाओ की योग्यता का पूर्ण विकास किये बिना किसी भी सामाजिक, आर्थिक एवं राजनीतिक व्यवस्था का विकास संभव नहीं है। महिलाओं के बिना समाज का अस्तित्व असंभव है।

2. शोध प्राविधि

प्रस्तावित प्रस्तावित शोध अध्ययन का क्षेत्र झारखण्ड राज्य के नवसृजित जिला रामगढ़ को लिया गया है। रामगढ़ जिले के शहरी क्षेत्र के महिलाओं का चुनाव जो मध्यम आय एवं निम्न आय वर्ग तथा उच्च और निम्न शैक्षणिक वर्ग से आती है। कुल 240 महिलाओं को अध्ययन के अन्तर्गत इसमें लिया गया है। तथ्य संकलन के लिए, अनुसूची/प्रश्नावली, कुलश्रेष्ठसामाजिक–आर्थिक स्थिति मानदंड महिलाओं के सामाजिक–आर्थिक स्थिति का आकंलन किया गया।

3. तथ्य विश्लेषण

आंकड़ों या समंको का सारणीयन कर उनका विश्लेषण करके परिणामों का प्रस्तुतीकरण है।

उत्तरदाताओं की सामान्य जानकारियाँ

सारणी 1: आयु की संरचना

आयु समूह	शहरी		ग्रामीण	
	उत्तरदाताओं की संख्या	प्रतिशत	उत्तरदाताओं की संख्या	प्रतिशत
21-30 वर्ष	36	30	12	10
31-40 वर्ष	42	35	48	40
41-50 वर्ष	30	25	36	30
51 वर्ष से ऊपर	12	10	24	20
कुल योग	120	100	120	100

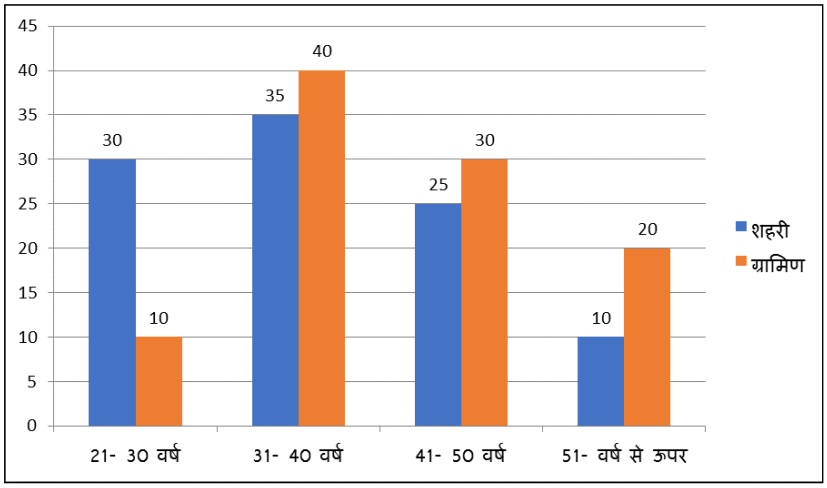

चित्र 1: शहरी एवं ग्रामीण क्षेत्र में आयु समूह

सारणी संख्या–1 से स्पष्ट होता है कि 21–30 वर्ष के आयु समूह में शहरी क्षेत्र में30 प्रतिशत और ग्रामीण क्षेत्र में 10 प्रतिशत महिलाएँ हैं। 31–40 वर्ष के आयु समूह में शहरी क्षेत्र में 42 प्रतिशत तथा ग्रामीण क्षेत्र में 48 प्रतिशत महिलाएँ हैं। उसी प्रकार 41–50 वर्ष के आयु समूह में शहरी क्षेत्र में 30 प्रतिशत एवं ग्रामीण क्षेत्र में 36 प्रतिशत महिलाएँ शिक्षित हैं तथा 51 से ऊपर आयु समूह में शहरी क्षेत्र की 10 प्रतिशत और ग्रामीण क्षेत्र की 24 प्रतिशत महिला शिक्षित हैं। इस प्रकार पारिवारिक समस्याओं के समाधान में अनुभवी और परिपक्व महिलाओं की आवश्यकता होती है। उपरोक्त सारणी से यह स्पष्ट होता हैं कि 31–40 वर्ष के आयु समूह की शिक्षित महिलायें इस शोध कार्य में ज्यादा संख्या में भाग ली। महिलाएँ का जातिगत संरचना

सारणी 2: जाति एवं महिलाएं

श्रेणी	शहरी		ग्रामीण	
	उत्तरदाताओं की संख्या	प्रतिशत	उत्तरदाताओं की संख्या	प्रतिशत
सामान्य जाति	66	55	54	45
पिछड़ी जाति	24	20	36	30
अनुसूचित जाति	18	15	12	10
अनुसूचित जनजाति	12	10	18	15
कुल	120	100	120	100

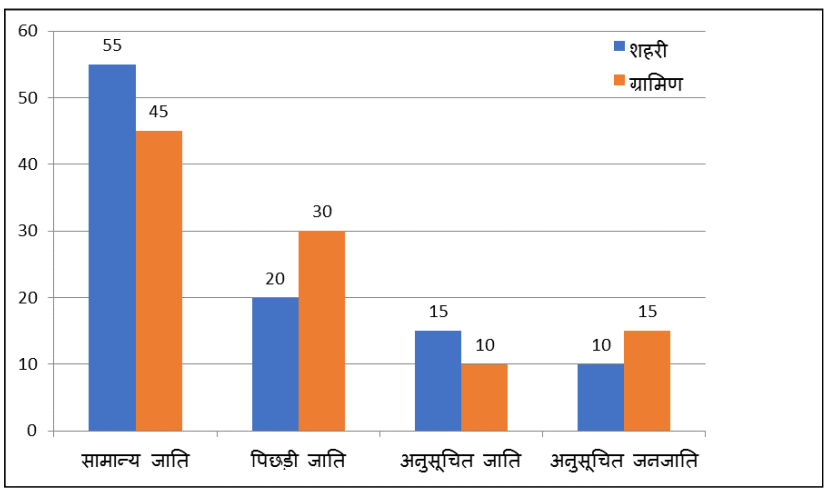

चित्र 2: शहरी एवं ग्रामीण क्षेत्र में श्रेणी जाति

भारतीय समाज में जाति व्यवस्था एक महत्वपूर्ण संस्था है इसका प्रभाव व्यक्तित्व और व्यवसाय पर भी पड़ता है। अतः महिलाएँ की जाति संरचना को जानने का प्रयास प्रस्तुत सारणी में किया गया है। प्रस्तुत सारणी संख्या 02 से स्पष्ट होता है कि शहरी की 55 प्रतिशत और ग्रामीण 45 प्रतिशत शिक्षित महिलायें सामान्य या उच्च जाति की है। जबकि ग्रामीण की 30 और शहरी की 20 प्रतिशत महिलाएं पिछड़ी जाति की है। उसी प्रकार शहरी के 18 और ग्रामीण की 10 प्रतिशत शिक्षित महिलायें अनुसूचित जाति की है। जबकि शहरी के 12 प्रतिशत और ग्रामीण की 15 प्रतिशत शिक्षित महिलायें अनुसूचित जनजाति की है। अतः निष्कर्षतः कहा जा सकता है कि आज भी सामान्य जाति की महिलाओं का प्रतिशत सबसे अधिक है जो शिक्षित है। ग्रामीण क्षेत्र की महिलाएँ में पिछड़ी जाति का प्रतिशत सबसे अधिक हैं।

सारणी 3: समाजिक प्रतिष्ठा एवं दायित्व से संबंधित जानकारियाँ

समाजिक प्रतिष्ठा एवं दायित्व	शहरी		ग्रामीण	
	उत्तरदाताओं की संख्या	प्रतिशत	उत्तरदाताओं की संख्या	प्रतिशत
महत्वहीन	30	25	36	30
सामान्य	84	70	81	67.5
वशिष्ट	6	5	3	2.5
अति विशिष्ट	0	0	0	0
कुल	120	100	120	100

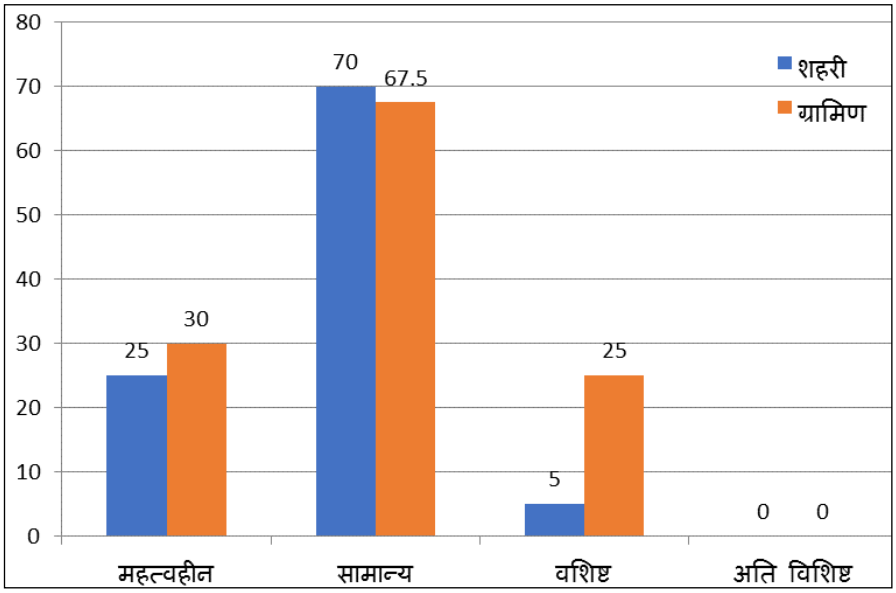

चित्र 3 शहरी एवं ग्रामीण क्षेत्र में समाजिक प्रतिष्ठा एवं दायित्व से संबंधित जानकारियाँ

उपर्युक्त सारणी के विश्लेषण से स्पष्ट होता है कि समाजिक प्रतिष्ठा एवं दायित्व से संबंधित जानकारियाँ मिलती है। शहरी क्षेत्र के 25 और ग्रामीण क्षेत्र के 30 प्रतिशत की स्थिति महत्वहीन है जबकि शहरी क्षेत्र के 70 और ग्रामीण क्षेत्र के 67.5 की स्थिति सामान्य है। उसी प्रकार शहरी क्षेत्र के 5 प्रतिशत और ग्रामीण क्षेत्र के 3 प्रतिशत विशिष्ट है। उसी प्रकार 0 प्रतिशत शहरी क्षेत्र और 0 प्रतिशत ग्रामीण क्षेत्र के अर्थात अति विशिष्ट स्थान किसी का नही है।

4. निष्कर्ष

शोध कार्य का प्रमुख उद्देष्य वर्त्तमान परिप्रेक्ष्य में नारी सशक्तिकरण का आंकलन था। महिलाएं अब सभी तरह की गतिविधियों जैसे कि शिक्षा, राजनीति, मीडिया, कला और संस्कृति, सेवा क्षेत्र, विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी आदि में हिस्सा ले रही हैं। इससे नारी सशक्तिकरण की पहचान मिल रही है। शहरी क्षेत्र के 25 और ग्रामीण क्षेत्र के 30 प्रतिशत की स्थिति महत्वहीन है जबकि शहरी क्षेत्र के 70 और ग्रामीण क्षेत्र के 67.5 की स्थिति सामान्य शहरी क्षेत्र के 25 और ग्रामीण क्षेत्र के 30 प्रतिशत की स्थिति महत्वहीन है जबकि शहरी क्षेत्र के 70 और ग्रामीण क्षेत्र के 67.5 की स्थिति सामान्य है। उसी प्रकार शहरी क्षेत्र के 5 प्रतिशत और ग्रामीण क्षेत्र के 3 प्रतिशत विशिष्ट है। उसी प्रकार 0 प्रतिशत शहरी क्षेत्र और 0 प्रतिशत ग्रामीण क्षेत्र के अर्थात अति विशिष्ट स्थान किसी का नही है। है। उसी प्रकार शहरी क्षेत्र के 5 प्रतिशत और ग्रामीण क्षेत्र के 3 प्रतिशत विशिष्ट है। उसी प्रकार 0 प्रतिशत शहरी क्षेत्र और 0 प्रतिशत ग्रामीण क्षेत्र के अर्थात अति विशिष्ट स्थान किसी का नही है।

5. संदर्भ

1. जैन देवकी योजना जनवरी 2016 पु0सं0 40
2. भट्ट, आर इला (2016) योजना सितम्बर 2016 पृ0सं0 17।
3. मासैक जे0 (1978): जेन्डर वॉयस एण्ड न्यूट्रीशन, सोशल वेलफेयरस फरवरी, मार्च पृ0सं0 2011
4. विप्लव (2013) महिला सशक्तिकरण के विविध आयाम, मेरठ, राहुल पब्लिसिंग, प्रथम संस्करण पृ0सं0 107
5. शर्मा रामअवतार (1997): भारतीय राजनीति, हिन्दी माध्यम कार्यान्वयन, निदेशालय, दिल्ली, पृ0सं0 104
6. मित्तल एल0एन0 (1993): जेन्डर बॉयस ऐण्ड न्यूट्रीशन, सोशल वेलफेयरस फरवरी, मार्च पृ0 सं0 2011